Children now we are starting class7th
chapter number 2 (दादी माँ)

पाठ का सारांश (summary)

दादी माँ शिव प्रसाद सिंह जी द्वारा लिखी गयी एक प्रसिद्ध कहानी है ,जिसमें लेखक अपनी दादी की मृत्यु के बाद ,उनके साथ बिताये हुए समय को याद करता है। वह क्वार के दिन याद करता है ,जब उसके गाँव में बरसात का पानी बहकर आता था। उस बहकर आये पानी में मोथा,साई की अधगली घासें ,घेऊर और बनप्याज की जड़ें तथा नाना प्रकार की बरसाती घासों के बीज बहकर आते थे। रास्तों में कीचड सूख जाता था ,इससे गाँव के लड़के किनारों पर झाग भरे जलाशयों में धमाके से कूदते थे। लेखक ऐसे जलाशय में दो एक दिन ही कूद सका था कि वह बीमार पड़ गया। दिनभर वह चादर लपेटे सोया था। दादी माँ उसी बुखार को लेकर बहुत चिंतित हो गयी थी। दिन भर वह चारपाई के पास बैठी रहती ,पंखा झलती ,सिर पर दाल चीनी रखती ,बीसों बार सिर पर हाथ रखती।

दादी माँ को गाँव की पचासों किस्म की दवाओं के नाम याद थे। गाँव में कोई बीमार होता ,तो उसके पास पहुंचती दादी माँ और वहां देखभाल करती। उन्हें भूत से लेकर मलेरिया ,सरनाम ,निमोनिया तक का ज्ञान था।लेखक के पास आज आधुनिक सुख सुविधाएं हैं ,लेकिन उसमें दादी माँ का स्नेह नहीं है।किशन भैया की शादी के मौके पर ,दादी के उत्साह और आनंद का ठिकाना नहीं था। सारा कामकाज उन्ही के देखरेख में होता था।एक दिन रामू की चाची पर वह बिगड़ रही थी।रामू की चाची ने दादी से पैसे लिए थे ,जो की फसल पकने पर चुकाने की बात कही थी। बिटिया की शादी होने के कारण रामू की चाचीउधार पैसे देने में असमर्थ थी। कई दिन बाद लेखक से एक

दिन रास्ते में रामी की चाची बताती है कि दादी ने सारा उधार माफ़ कर दिया है ,साथ ही १० रुपये का नोट भी दिया है। अतः वह बहुत खुश है।

किशन भैया के विवाह के दिनों में चार - पांच रोज पहले से ही औरतें रात रात भर गीत गाती थी।विवाह की रात को अभिनय भी होता था। उस नाटक में विवाह से लेकर पुत्रोत्पत्ति तक के सभी दृश्य दिखाए जाते थे।सभी पार्ट औरतें ही करती है। लेखक बीमार होने के कारण बारात में न जा सका। उसे दादी ने पास की चारपाई पर सुला दिया था।लेखक न सोकर चादर ओढ़े जाग रहा था।लेखक के हंसने पर गाँव की औरतों ने ऐतराज किया ,जिससे दादी माँ ने बीच बचाव किया।

दादा की मृत्यु के बाद वे बहुत उदास रहने लगी।संसार उन्हें धोखे से भरा मालूम पड़ता।दादा जी के श्राद्ध में दादी माँ के मना करने पर भी पिता जी ने अतुल संपत्ति व्यय की , घर को उधारी पर ला कर खड़ा कर दिया। दादी माँ ने ऐसे बुरे वक्त पर अपने परिवार की निशानी सोने के कंगन पिता जी को कर्ज चुकाने के लिए दे दिए। ऐसे समय में वह लेखक को शापभ्रष्ट देवी लग रही थी। लेखक वर्तमान में लौट आया ,उसे किशन भैया का पत्र मिला ,जिसमें दादी की मृत्यु की सूचना दी गयी थी। लेखक बार बार स्वयं से ही पूछ बैठता कि क्या सचमुच दादी माँ नहीं रही।

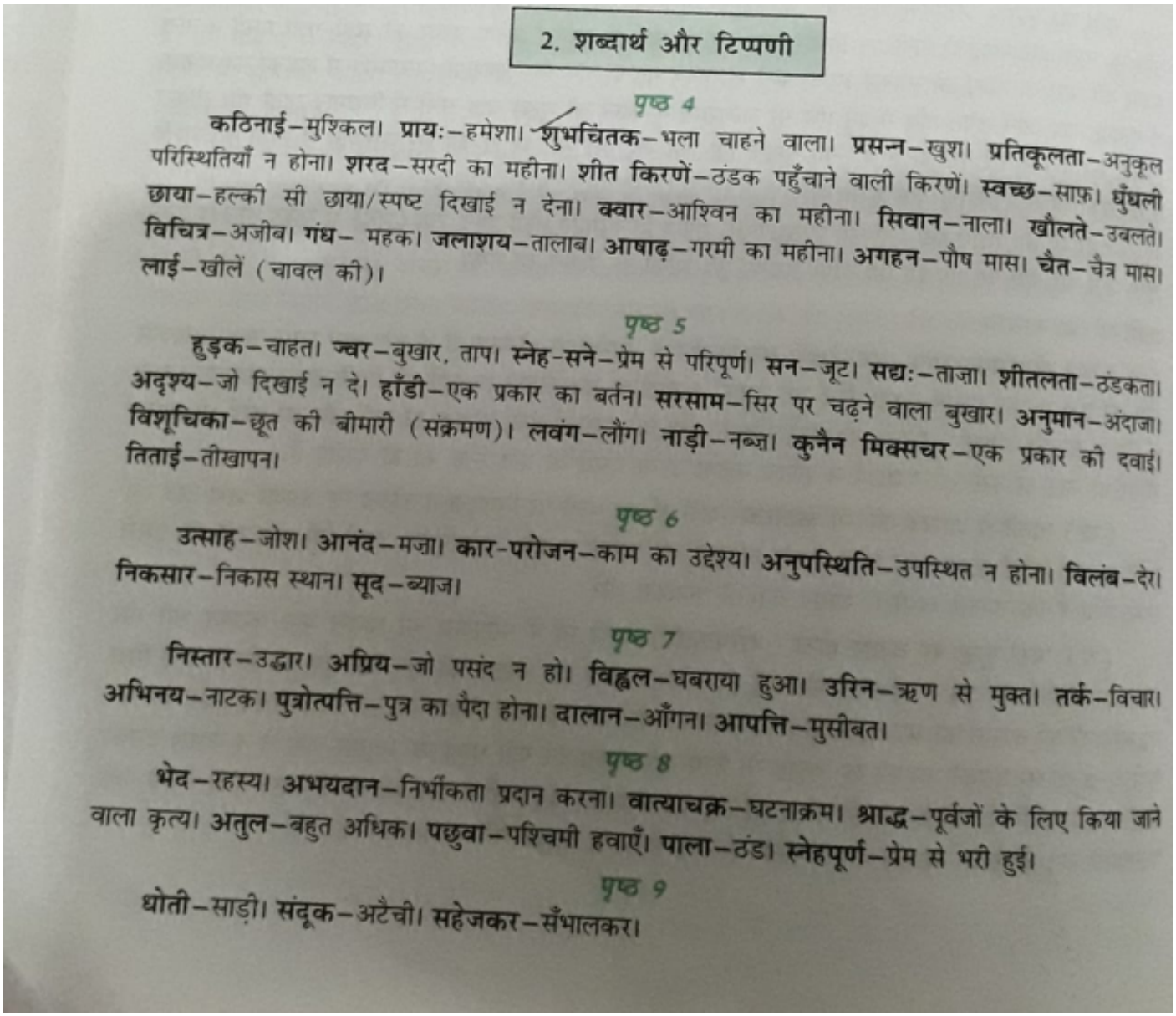

2. शब्दार्थ और टिप्पणी

पृष्ठ 4

कठिनाई–मुश्किल। **प्राय:**–हमेशा। **शुभचिंतक**–भला चाहने वाला। **प्रसन्न**–खुश। **प्रतिकूलता**–अनुकूल परिस्थितियाँ न होना। **शरद**–सरदी का महीना। **शीत किरणें**–ठंडक पहुँचाने वाली किरणें। **स्वच्छ**–साफ़। **धुँधली छाया**–हल्की सी छाया/स्पष्ट दिखाई न देना। **क्वार**–आश्विन का महीना। **सिवान**–नाला। **खौलते**–उबलते। **विचित्र**–अजीब। **गंध**– महक। **जलाशय**–तालाब। **आषाढ़**–गरमी का महीना। **अगहन**–पौष मास। **चैत**–चैत्र मास। **लाई**–खीलें (चावल की)।

पृष्ठ 5

हुड़क–चाहत। **ज्वर**–बुखार, ताप। **स्नेह-सने**–प्रेम से परिपूर्ण। **सन**–जूट। **सद्य:**–ताज़ा। **शीतलता**–ठंडकता। **अदृश्य**–जो दिखाई न दे। **हाँडी**–एक प्रकार का बर्तन। **सरसाम**–सिर पर चढ़ने वाला बुखार। **अनुमान**–अंदाजा। **विशूचिका**–छूत की बीमारी (संक्रमण)। **लवंग**–लौंग। **नाड़ी**–नब्ज़। **कुनैन मिक्सचर**–एक प्रकार की दवाई। **तिताई**–तीखापन।

पृष्ठ 6

उत्साह–जोश। **आनंद**–मज़ा। **कार-परोजन**–काम का उद्देश्य। **अनुपस्थिति**–उपस्थित न होना। **विलंब**–देर। **निकसार**–निकास स्थान। **सूद**–ब्याज।

पृष्ठ 7

निस्तार–उद्धार। **अप्रिय**–जो पसंद न हो। **विह्वल**–घबराया हुआ। **उरिन**–ऋण से मुक्त। **तर्क**–विचार। **अभिनय**–नाटक। **पुत्रोत्पत्ति**–पुत्र का पैदा होना। **दालान**–आँगन। **आपत्ति**–मुसीबत।

पृष्ठ 8

भेद–रहस्य। **अभयदान**–निर्भीकता प्रदान करना। **वात्याचक्र**–घटनाक्रम। **श्राद्ध**–पूर्वजों के लिए किया जाने वाला कृत्य। **अतुल**–बहुत अधिक। **पछुवा**–पश्चिमी हवाएँ। **पाला**–ठंड। **स्नेहपूर्ण**–प्रेम से भरी हुई।

पृष्ठ 9

धोती–साड़ी। **संदूक**–अटैची। **सहेजकर**–सँभालकर।

पेज 10 के शब्द -अर्थ

विलीन -समाप्त

दादी माँ प्रश्न अभ्यास कहानी से

प्र.१.लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ-साथ बचपन की और किन-किन बातों की याद आ जाती है?

उ.१. लेखक को दादी माँ की मृत्यु पर बहुत दु:ख होता है। वह बार बार पुरानी घटनाओं को याद करता है ,जिसमें लेखक के बीमार पड़ने पर दादी देखभाल करती हैं। किशन भैया की शादी के समय लेखक के हँसने पर गाँव की औरतों के विरोध पर दादी का हस्तक्षेप करना। रामी

की चाची का सहृदयता के साथ पुराने कर्जे माफ़ करना तथा शादी में दस रुपये की आर्थिक मदद करना।घर पर विपत्ति के समय अपने सोने के कड़े देना। ऐसी कुछ दादी के साथ जुडी स्मृतियाँ हैं ,जिन्हें लेखक भूल नहीं सकता है।

प्र.२. दादा की मृत्यु के बाद लेखक के घर की आर्थिक स्थिति खराब क्यों हो गई थी ?

उ. दादा जी की मृत्यु के बाद पिता जी की अज्ञानता के कारण घर की आर्थिक स्थिति ख़राब हो गयी। पाखंडी शुभचिंतकों की बाढ़ आ गयी ,जो मुँह में राम बगल में छुरी की कहावत सिद्ध करते हैं।ऐसे में पिता जी ने दादा जी के श्राद्ध में अतुल संपत्ति खर्च कर दी ,जिससे दादी को अपने सोने के कंगन बेचकर चुकाना पड़ा।

प्र.३. दादी माँ के स्वभाव का कौन सा पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है और क्यों?

उ. दादी माँ केवल लेखक के प्रति ही प्रेम भाव न रखकर सभी के प्रति स्नेह रखती थी।वह सभी को साफ़ सफाई की हिदायत देती थी। कोई भी बीमार पड़ता ,तो दादी उसकी देखभाल करती।रामी की चाची को वह आर्थिक मदद देती हैं।लेखक के पिता की अज्ञानता के कारण ,घर की आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है ,जिसे वह सोने के कड़े बेचकर ठीक करती है। इस प्रकार दादी माँ स्नेह ,ममता और त्याग की मूर्ति हैं।

नोट- 1) नई कॉपी उपलब्ध न हो तो किसी रफ कॉपी में या पेज में पाठ के कठिन शब्द और प्रश्न उत्तर लिखें।
2) पाठ का सारांश (सार) और शब्द-अर्थ केवल पढ़ने व समझने के लिए है।